पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु
णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं

(छंद-तातंक)

अरिहंतो को नमस्कार है, सिद्धों को सादर वंदन ।
आचार्यों को नमस्कार है, उपाध्याय को है वन्दन ।।1।।
और लोक के सर्वसाधुओं को है विनय सहित वन्दन ।
परम पंच परमेष्ठी प्रभु को बार-बार मेरा वन्दन ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

मंगल चार, चार हैं उत्तम चार शरण में जाऊँ मैं ।
मन-वच-काय त्रियोग पूर्वक, शुद्ध भावना भाऊँ मैं ।।3।।
श्री अरिहंत देव मंगल हैं, श्री सिद्ध प्रभु हैं मंगल ।
श्री साधु मुनि मंगल हैं, है केवलि कथित धर्म मंगल ।।4।।
श्री अरिहंत लोक में उत्तम, सिद्ध लोक में हैं उत्तम ।
साधु लोक में उत्तम हैं, है .केवलि कथित धर्म उत्तम ।।5।।
श्री अरिहंत शरण में जाऊँ, सिद्ध लोक में मैं जाऊँ ।
साधु शरण में जाऊँ, केवलि कथित धर्म शरणा पाऊँ ।।6।।

ॐ ह्रीं नमो अर्हते स्वाहा पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

मंगल विधान

अपवित्र हो या पवित्र, जो णमोकार को ध्याता है ।
चाहे सुस्थित हो या दुस्थित, पाप-मुक्त हो जाता है ।।1।।

हो पवित्र-अपवित्र दशा, कैसी भी क्यों नहिं हो जन की ।
परमातम का ध्यान किये, हो अन्तर-बाहर शुचि उनकी ।।2।।

है अजेय विघ्नों का हर्त्ता, णमोकार यह मंत्र महा ।
सब मंगल में प्रथम सुमंगल, श्री जिनवर ने एम कहा ।।3।।

सब पापों का है क्षयकारक, मंगल में सबसे पहला ।
नमस्कार या णमोकार यह, मन्त्र जिनागम में पहला ।।4।।

अर्हं ऐसे परं ब्रह्म-वाचक, अक्षर का ध्यान करूँ ।
सिद्धचक्र का सद्बीजाक्षर, मन-वच-काय प्रणाम करूँ ।।5।।

अष्टकर्म से रहित मुक्ति-लक्ष्मी के घर श्री सिद्ध नमूँ ।
सम्यक्त्वादि गुणों से संयुत, तिन्हें ध्यान धर कर्म वमूँ ।।6।।

जिनवर की भक्ति से होते, विघ्न समूह अन्त जानो ।
भूत शाकिनी सर्प शांत हो, विष निर्विष होता मानो ।।7।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

जिनसहस्त्रनाम अर्घ्य

मैं प्रशस्त मंगल गानों से युक्त जिनालय माँहि यजूँ ।
जल चंदन अक्षत प्रसून चरु , दीप धूल फल अर्घ्य सजूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।